CHAPTER 1

दो बैलों की कथा

CBSE *कक्षा 9 · हिंदी (पाठ्यक्रम-अ) · क्षितिज भाग-1 · गद्य खंड*

CBSE · Hindi · Class 9

WHAT THIS CHAPTER DOES

A कहानी का घटनाक्रम क्रम से समझना — खेत से कांजीहौस तक एवं वापसी।

B हीरा-मोती की मित्रता एवं प्रमुख पात्रों का चरित्र पहचानना।

Boards prep that builds confidence, not anxiety.

TODAY'S MISSION

आज का लक्ष्य

1. कहानी का घटनाक्रम क्रम से समझना — खेत से कांजीहौस तक एवं वापसी।
2. हीरा-मोती की मित्रता एवं प्रमुख पात्रों का चरित्र पहचानना।
3. पाठ का संदेश — स्वतंत्रता, अहिंसक विद्रोह एवं पशु-संवेदना — स्पष्ट करना।
4. प्रतीकार्थ समझना — बैल = किसान/पराधीन जनता — और 5/6 अंक अर्जित करना।

WHY THIS MATTERS

यह पाठ क्यों महत्त्वपूर्ण है

1. क्षितिज गद्य खंड का प्रथम पाठ — पूरे वर्ष की कहानी-पठन एवं भाव-ग्रहण शैली की नींव।
2. प्रति परीक्षा 4-6 अंक। मित्रता, संदेश एवं प्रतीकार्थ के प्रश्न लगभग प्रति-वर्ष आते हैं।
3. प्रेमचंद के प्रतीकात्मक लेखन का परिचय — आगे की गद्य रचनाओं को समझने में सहायक।

TOPIC

A

लेखक एवं विधा का परिचय

TOPIC

प्रेमचंद एवं पाठ का स्वरूप

लेखक — प्रेमचंद

प्रेमचंद हिंदी एवं उर्दू के अमर कथाकार हैं जिनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। उनका जन्म 1880 में वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ और 1936 में उनका देहांत हुआ। उन्हें 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि से सम्मानित किया गया। 'गोदान', 'गबन', 'निर्मला', 'कफन', 'पंच परमेश्वर' एवं 'ईदगाह' उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। वे आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं — अर्थात् वे समाज की कठोर सच्चाई दिखाते हुए भी एक

विधा — पशु-कथा

'दो बैलों की कथा' एक पशु-कथा (animal fable) है, जिसमें मनुष्येतर प्राणियों — दो बैलों — को केंद्र में रखकर मानवीय एवं सामाजिक संदेश दिया जाता है। यह विधा प्राचीन पंचतंत्र-परम्परा से जुड़ी है, परंतु प्रेमचंद इसे आधुनिक यथार्थ एवं राजनीतिक चेतना से जोड़ देते हैं। पशुओं के सरल जीवन के माध्यम से वे वे बातें कह जाते हैं जो सीधे कहना कठिन होता — जैसे पराधीनता की पीड़ा एवं स्वतंत्रता का मूल्य। इसी कारण यह केवल

मूल विषय

पाठ का आरम्भ इस व्यंग्य से होता है कि पशुओं में गधे एवं बैल को 'मूर्खता' का प्रतीक माना जाता है। परंतु प्रेमचंद वास्तव में इस 'मूर्खता' को सरलता, सहनशीलता एवं निश्छलता बताकर उसकी प्रशंसा करते हैं। पाठ का मूल विषय हीरा-मोती नामक दो बैलों की मित्रता, उनके कष्ट, स्वतंत्रता की चाह एवं अन्याय के विरुद्ध उनका विद्रोह है। ऊपरी कथा के भीतर एक गहरा प्रतीकार्थ छिपा है, जिसे आगे की स्लाइडों में खोला जाएगा।

रचना-काल का सन्दर्भ

यह कथा भारत के स्वाधीनता-संघर्ष के युग की है। उस समय भारतीय जनता अंग्रेज़ी शासन के अधीन थी एवं किसान-मज़दूर दोहरे शोषण का शिकार थे। इसी पृष्ठभूमि में प्रेमचंद बैलों की पराधीनता एवं उनके विद्रोह को एक राजनीतिक रूपक बना देते हैं — बैल पराधीन जनता एवं परिश्रमी किसान के प्रतीक बन जाते हैं। इस ऐतिहासिक सन्दर्भ को जानने से पाठ का संदेश कहीं अधिक गहराई से समझ में आता है, और उच्च-अंक के उत्तर लिखे जा सकते हैं।

TOPIC

B

कथावस्तु — कहानी का सार

TOPIC

घटनाक्रम — आरम्भ से अंत तक

आरम्भ — झूरी के घर

कहानी झूरी नामक किसान के घर से आरम्भ होती है, जिसके पास हीरा एवं मोती नामक दो सुंदर एवं बलिष्ठ बैल हैं। झूरी अपने बैलों से अत्यधिक स्नेह करता है और बैल भी उसके प्रति निष्ठावान हैं। दोनों बैल आपस में घनिष्ठ मित्र हैं — खेत में काम करते समय एक-दूसरे से अधिक भार उठाने की होड़ करते हैं तथा नाँद पर भी समान-भाव रखते हैं। यह आरम्भिक प्रसंग स्नेहपूर्ण स्वामी-सेवक सम्बन्ध एवं अटूट पशु-मैत्री की नींव रखता है, जो आगे की पूरी

मोड़ — गया के घर भेजा जाना

झूरी अपने साले गया के यहाँ खेती के लिए दोनों बैल भेज देता है। गया कठोर, स्वार्थी एवं निर्दयी स्वभाव का है — वह बैलों को मारता-पीटता है, सूखा भूसा देता है एवं उपेक्षा करता है। बैल इस अपमान एवं अत्याचार को सहन नहीं कर पाते। पहली ही रात वे रस्सी तुड़ाकर भाग निकलते हैं और रातभर चलकर झूरी के घर लौट आते हैं। यह घटना स्नेह की चुम्बकीय शक्ति एवं स्वतंत्रता की चाह — दोनों को एक साथ प्रकट करती है। झूरी प्रसन्न होता है, परंतु

संघर्ष — सांड, मटर एवं कांजीहौस

गया दोबारा बैलों को कठोरता से बाँधकर ले जाता है, इस बार वे फिर भागते हैं। रास्ते में एक हमलावर सांड से उनका सामना होता है, जहाँ मोती अपने मित्र हीरा की रक्षा के लिए सांड से भिड़ जाता है और दोनों मिलकर उसे भगा देते हैं। भूख से व्याकुल होकर वे एक खेत में मटर चरने लगते हैं, तभी पकड़कर कांजीहौस (आवारा पशुओं के सरकारी बाड़े) में बंद कर दिए जाते हैं। यहाँ उन्हें भूखा रखा जाता है और नीलाम होने का भय उत्पन्न होता है।

मुक्ति एवं वापसी

कांजीहौस में बंदी रहते हुए बैल दीवार तोड़ने का प्रयास करते हैं — यह उनका अहिंसक विद्रोह है। इसी बीच गया के घर की छोटी (सौतेली) लड़की, जो बैलों के प्रति करुणा रखती है, छिपकर उन्हें रोटियाँ खिलाती है और अंततः रात में उनकी रस्सी खोल देती है। बैल फिर भाग निकलते हैं। एक बार दढ़ियल कसाई के हाथ लगने का भय भी आता है, पर अंततः वे सकुशल अपने प्रिय मालिक झूरी के घर लौट आते हैं। झूरी उन्हें प्रेमपूर्वक अपना लेता है।

TRY IT · SOLVE BEFORE YOU PEEK

कहानी में बैल किसके घर से भागते हैं और किसके पास लौट आते हैं — तथा यह स्नेह की कौन-सी शक्ति प्रकट करता है?

SOLUTION

ANSWER बैल अपने कठोर मालिक गया के घर से भागते हैं और अपने पुराने स्नेही मालिक झूरी के पास लौट आते हैं। यह दर्शाता है कि बल से बाँधा गया प्राणी भाग जाता है, परंतु स्नेह से बँधा प्राणी स्वयं लौट आता है — प्रेम की शक्ति बल से बड़ी है।

TOPIC

C

पात्र-चित्रण

TOPIC

कथा के प्रमुख पात्र

हीरा

हीरा दोनों बैलों में अपेक्षाकृत विवेकशील, धैर्यवान एवं सहनशील है। वह सोच-समझकर कार्य करता है तथा अपने मित्र मोती को संकट में संयम बरतने की सलाह देता है। मित्रता उसकी पहली निष्ठा है — वह कभी मोती को छोड़कर अकेला नहीं भागता। सांड के आक्रमण के समय वह संकट में होता है, पर मोती द्वारा बचा लिया जाता है। हीरा का चरित्र बुद्धिमत्ता एवं नेतृत्व का प्रतीक है — वह विद्रोह भी करता है पर सोच-

मोती

मोती हीरा का घनिष्ठ मित्र है — उग्र, निर्भीक एवं आत्म-त्यागी स्वभाव का। वह अन्याय के विरुद्ध शीघ्र भड़क उठता है, सांड से बिना जान की परवाह किए भिड़ जाता है और हीरा की रक्षा करता है। कांजीहौस में जब उसे अकेले भागने का अवसर मिलता है तब भी वह मित्र को छोड़कर नहीं जाता — 'मित्र को संकट में अकेला छोड़ना' उसके लिए असम्भव है। मोती निर्भीकता, मित्र-प्रेम एवं स्वाभिमान का प्रतीक है।

झूरी

झूरी हीरा-मोती का मूल मालिक है — स्नेही, उदार एवं हृदयवान किसान। वह बैलों को पशु नहीं, परिवार का सदस्य मानता है। जब बैल गया के घर से भागकर लौटते हैं तो वह क्रोधित नहीं होता, बल्कि प्रसन्न होकर उन्हें गले लगाता है। झूरी का चरित्र यह सिद्ध करता है कि प्रेम एवं करुणा से किसी का हृदय जीता जा सकता है, बल से नहीं। वह आदर्श स्वामी का प्रतीक है — जिसके स्नेह के कारण ही बैल बार-

गया एवं छोटी लड़की

गया झूरी का साला तथा कठोर, स्वार्थी एवं निर्दयी मालिक है — मारना, भूखा रखना एवं उपेक्षा उसका स्वभाव है। वह दर्शाता है कि बल एवं क्रूरता से किसी का मन नहीं जीता जा सकता। उसके विपरीत गया के घर की छोटी (सौतेली) लड़की करुणा एवं निर्दोष स्नेह का प्रतीक है — वह बैलों को छिपकर रोटियाँ खिलाती है एवं अंत में उनकी रस्सी खोलकर मुक्त करा देती है। यही करुणा बैलों की मुक्ति का

THEOREM · LOAD-BEARING RESULT

हीरा-मोती की मित्रता — कथा की आत्मा

> *हीरा एवं मोती की मित्रता स्वार्थ से ऊपर, त्याग एवं पारस्परिक रक्षा पर टिकी है। प्रेमचंद इसे मनुष्य-मैत्री से भी ऊँचे आदर्श के रूप में प्रस्तुत करते हैं।*

STATEMENT

मित्रता तीन प्रसंगों में चरम पर पहुँचती है — (1) खेत में एक-दूसरे का भार बँटाने की होड़ एवं नाँद पर समान-भाव; (2) गया के घर से एक साथ भागना, अकेले भागने की कल्पना तक न करना; (3) सांड के आक्रमण पर मोती द्वारा हीरा की रक्षा तथा कांजीहौस में अवसर पाकर भी अकेले न

WHY THIS MATTERS

- यह मित्रता कथा को भावनात्मक गहराई देती है एवं पाठक को बैलों के सुख-दुख से जोड़ देती है। परीक्षा में मित्रता-आधारित 5-अंकी प्रश्न लगभग प्रति-वर्ष आता है — इसके लिए तीन भिन्न प्रसंग पाठ-संदर्भ सहित स्मरण रखें।

WATCH OUT FOR

NOTE केवल 'वे अच्छे मित्र थे' लिखकर न रुकें। प्रत्येक प्रसंग पाठ-संदर्भ सहित दें — विशेषकर मोती के आत्म-त्याग (अकेले न भागना) वाला बिंदु, जो सर्वाधिक अंक देता है।

THEOREM · LOAD-BEARING RESULT

केंद्रीय भाव — स्वतंत्रता सर्वोपरि

> *इस कथा का केंद्रीय भाव यह है कि स्वतंत्रता मनुष्य ही नहीं, पशु तक का जन्मसिद्ध अधिकार है। पराधीनता में सुख-सुविधा पाकर भी प्राणी संतुष्ट नहीं होता — वह बंधन तोड़कर मुक्ति चाहता है।*

STATEMENT

हीरा-मोती गया के घर मार-पीट सहकर भी टिके नहीं रहते; वे बार-बार भागते हैं, हल जोतने से इनकार करते हैं एवं कांजीहौस की दीवार तोड़ देते हैं। प्रेमचंद इन घटनाओं के माध्यम से घोषित करते हैं कि स्वतंत्रता की चाह किसी भी सुविधा से बड़ी है। बैल झूरी के पास इसलिए लौटते हैं क्योंकि वहाँ स्नेह

WHY THIS MATTERS

- यह भाव कथा को मात्र पशु-कहानी से ऊपर उठाकर एक राष्ट्रीय रूपक बना देता है। स्वाधीनता-आंदोलन के युग में लिखी यह कथा पराधीन भारत की मुक्ति-आकांक्षा का प्रतीक है। परीक्षा में संदेश-आधारित प्रश्न लगभग हर वर्ष इसी भाव से जुड़े आते हैं।

WATCH OUT FOR

NOTE इस भाव को केवल 'बैल आज़ादी चाहते हैं' तक सीमित न करें। यहाँ स्वतंत्रता के साथ स्नेह, सम्मान एवं विद्रोह — तीनों जुड़े हैं। प्रतीकार्थ (पराधीन जनता/किसान) को जोड़े बिना उत्तर अधूरा रहता है।

TOPIC

पाठ के चार प्रमुख संदेश

मित्रता का आदर्श

कथा का सर्वप्रमुख संदेश सच्ची मित्रता है। हीरा-मोती की मैत्री स्वार्थ से ऊपर, त्याग एवं रक्षा पर टिकी है — खेत में एक-दूसरे का भार बँटाना, गया के घर से एक साथ भागना, सांड से मित्र की रक्षा करना एवं कांजीहौस में अकेले न भागना। प्रेमचंद इस पशु-मैत्री को मनुष्य-मैत्री से भी ऊँचा आदर्श बनाकर प्रस्तुत करते हैं। संदेश यह है कि सच्चा मित्र संकट में साथ नहीं छोड़ता और अपने सुख से पहले मित्र की रक्षा करता है — यही मित्रता की कसौटी

अन्याय के विरुद्ध विद्रोह

दूसरा संदेश यह है कि सहनशीलता की भी सीमा होती है — अति होने पर सीधा-सरल प्राणी भी विद्रोह कर उठता है। बैल आरम्भ में कष्ट सहते हैं, परंतु अंततः हल जोतने से इनकार करते हैं, रस्सी तोड़कर भागते हैं एवं कांजीहौस की दीवार ढहा देते हैं। यह हिंसक नहीं, बल्कि अहिंसक किंतु दृढ़ प्रतिरोध है। प्रेमचंद यहाँ शोषित श्रमजीवी एवं पराधीन जनता को संकेत देते हैं कि अन्याय को अंतहीन सहना नहीं चाहिए — स्वाभिमान के लिए संगठित प्रतिरोध

पशु-संवेदना एवं करुणा

तीसरा संदेश पशु-संवेदना का है — पशुओं में भी मनुष्य जैसी भावनाएँ, मित्रता, स्वामिभक्ति एवं पीड़ा होती है, अतः उनके साथ करुणा का व्यवहार करना चाहिए। झूरी का स्नेह एवं छोटी लड़की द्वारा रोटी खिलाना तथा रस्सी खोलना इसी करुणा के उदाहरण हैं। प्रेमचंद यह भी सिद्ध करते हैं कि क्रूरता (गया) से नहीं, प्रेम एवं करुणा (झूरी, लड़की) से ही किसी का हृदय जीता जा सकता है। निरीह प्राणियों के प्रति संवेदनशीलता मानवता की कसौटी

स्नेह से विजय

चौथा संदेश यह है कि बल एवं दंड से किसी को वश में नहीं किया जा सकता, परंतु स्नेह से सहज ही जीता जा सकता है। गया मार-पीटकर भी बैलों को नहीं रोक पाता — वे भाग जाते हैं; किंतु झूरी के स्नेह के कारण बैल स्वयं उसके पास लौट आते हैं। यह स्वामी-सेवक, माता-पिता-संतान एवं शासक-जनता — सभी सम्बन्धों पर लागू होने वाला सार्वभौमिक सत्य है। प्रेमचंद का यह नैतिक निष्कर्ष कथा को कालजयी बनाता है — प्रेम की शक्ति बल की

THEOREM · LOAD-BEARING RESULT

प्रतीकात्मकता — बैल किसके प्रतीक हैं

> *इस कथा में हीरा-मोती बैल केवल पशु नहीं — वे भारतीय किसान एवं पराधीन भारत की जनता के प्रतीक हैं। उनकी सहनशीलता, परिश्रम एवं विद्रोह शोषित किंतु स्वतंत्रता-कामी जन-समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं।*

STATEMENT

बैल का प्रतीकार्थ तीन स्तरों पर खुलता है — (1) परिश्रमी किसान, जो दिन-रात श्रम करके भी शोषित रहता है; (2) पराधीन भारत की जनता, जो बंधन में जकड़ी होकर भी मुक्ति चाहती है; (3) सहनशील किंतु विद्रोही श्रमजीवी वर्ग, जो अति होने पर प्रतिरोध करता है। गया का अत्याचार

WHY THIS MATTERS

- इस प्रतीकार्थ के बिना कथा मात्र एक पशु-कहानी रह जाती है। प्रतीक की पहचान ही प्रेमचंद की रचना को साहित्यिक गहराई देती है एवं उसे स्वाधीनता-युग की चेतना से जोड़ती है। उच्च-अंक वाले उत्तरों में प्रतीकार्थ का उल्लेख अनिवार्य है।

WATCH OUT FOR

NOTE प्रतीक को शाब्दिक अर्थ (केवल पशु) से कभी न जोड़ें। प्रश्न जब 'प्रतीकार्थ' पूछे, तब किसान + पराधीन जनता + विद्रोह — तीनों आयाम दें, केवल 'किसान' लिखकर न रुकें।

TOPIC

D

शिल्प एवं भाषा-शैली

TOPIC

प्रेमचंद की भाषा-शैली एवं कला

सरल एवं सजीव भाषा

प्रेमचंद की भाषा सरल, सहज एवं जनसामान्य की बोलचाल के निकट है। वे तत्सम शब्दों के साथ तद्भव एवं देशज शब्दों — जैसे 'कांजीहौस', 'पगहा', 'नाँद' — का सहज प्रयोग करते हैं, जिससे ग्रामीण परिवेश जीवंत हो उठता है। उनकी भाषा में आडम्बर नहीं, बल्कि एक स्वाभाविक प्रवाह है। संवाद एवं वर्णन इतने सजीव हैं कि पाठक को घटनाएँ आँखों के सामने घटित होती प्रतीत होती हैं। यही सरल-सजीव भाषा प्रेमचंद को जन-कथाकार

व्यंग्य एवं मानवीकरण

प्रेमचंद की कला का प्रमुख तत्त्व व्यंग्य है — पाठ के आरम्भ में बैल को 'मूर्खता' का प्रतीक बताकर वे वस्तुतः समाज की उस सोच पर व्यंग्य करते हैं जो सरलता को मूर्खता समझ बैठता है। साथ ही वे मानवीकरण (personification) का सुंदर प्रयोग करते हैं — बैलों को मनुष्य जैसी भावनाएँ, मित्रता, स्वाभिमान एवं विवेक देकर। इस मानवीकरण से ही पशु-कथा भावनात्मक गहराई प्राप्त करती है और पाठक बैलों के सुख-दुख से

प्रतीक एवं रूपक

इस रचना का सर्वाधिक सशक्त शिल्प-तत्त्व प्रतीकात्मकता है। ऊपरी स्तर पर यह बैलों की कथा है, किंतु भीतर ही भीतर बैल किसान एवं पराधीन जनता के, गया शोषक-व्यवस्था के तथा कांजीहौस कैद/परतंत्रता के प्रतीक बन जाते हैं। इस बहुस्तरीय रूपक के कारण कथा एक साथ दो स्तरों पर चलती है — मनोरंजक कहानी तथा राजनीतिक-सामाजिक संदेश। यही द्वि-स्तरीयता प्रेमचंद की कला की ऊँचाई है, जो उन्हें केवल कहानीकार नहीं, युग-

आदर्शोन्मुख यथार्थवाद

प्रेमचंद की शैली आदर्शोन्मुख यथार्थवाद कहलाती है — वे समाज की कठोर सच्चाई (शोषण, क्रूरता, पराधीनता) को निर्भीकता से दिखाते हैं, परंतु अंत में एक नैतिक आदर्श की ओर ले जाते हैं। इस कथा में गया का अत्याचार यथार्थ है, किंतु झूरी का स्नेह, छोटी लड़की की करुणा एवं बैलों की सकुशल वापसी आदर्श का संकेत हैं। इस प्रकार वे निराशा में नहीं छोड़ते, बल्कि आशा एवं मानवीय मूल्यों की विजय दिखाते हैं। यही संतुलित दृष्टि उनके लेखन

WORKED EXAMPLE

5 अंक — बैल का प्रतीकार्थ कैसे लिखें

1. आरम्भ — प्रतीक को सीधे नाम दें: 'इस कहानी में हीरा-मोती बैल भारतीय किसान एवं श्रमजीवी वर्ग के प्रतीक हैं।'
2. दूसरा स्तर — 'गहरे स्तर पर बैल पराधीन भारत की जनता के प्रतीक हैं, जो बंधन में होकर भी स्वतंत्रता चाहती है (कथा स्वाधीनता-आंदोलन के युग की है)।'
3. तीसरा स्तर — विद्रोह जोड़ें: 'बैल अन्याय के विरुद्ध विद्रोह के भी प्रतीक हैं — हल जोतने से इनकार एवं कांजीहौस की दीवार तोड़ना इसके प्रमाण हैं।'
4. निष्कर्ष — 'इस प्रकार बैल परिश्रम, सहनशीलता एवं स्वतंत्रता-संघर्ष — तीनों का सम्मिलित प्रतीक हैं; गया शोषक-व्यवस्था का प्रतीक है।' — प्रतीक को कभी शाब्दिक (केवल पशु) अर्थ न दें।

TRY IT · SOLVE BEFORE YOU PEEK

पाठ के आरम्भ में बैल को 'मूर्खता' का प्रतीक कहा गया है — क्या प्रेमचंद सचमुच बैल को मूर्ख मानते हैं?

SOLUTION

ANSWER नहीं। यह व्यंग्य है। प्रेमचंद वास्तव में इस 'मूर्खता' को सरलता, सहनशीलता एवं निश्छलता बताकर उसकी प्रशंसा करते हैं — जिसे संसार मूर्खता समझता है, वह असल में सीधापन एवं सहनशीलता है, यही गुण बैल को पूजनीय बनाते हैं।

TOPIC

पाठ का मूल विषय

TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** यह केवल दो बैलों की मनोरंजक कहानी है।

✓ **CORRECT** यह मात्र पशु-कथा नहीं — एक प्रतीकात्मक रचना है। हीरा-मोती बैल केवल पशु नहीं, बल्कि भारतीय किसान एवं पराधीन भारत की जनता के प्रतीक हैं। प्रेमचंद बैलों की सहनशीलता, मित्रता, स्वामिभक्ति एवं स्वतंत्रता-प्रेम के माध्यम से शोषित जनता की पीड़ा एवं स्वाधीनता की आकांक्षा को व्यक्त करते हैं। पाठ का असली उद्देश्य संदेश-निरूपण है, मनोरंजन नहीं।

TOPIC

बैल का 'मूर्ख' कहलाना

TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** प्रेमचंद बैल को सचमुच मूर्ख एवं बुद्धिहीन मानते हैं।

✓ **CORRECT** पाठ के आरम्भ में बैल को 'बेवकूफी' का प्रतीक कहा जाना व्यंग्य है। प्रेमचंद वास्तव में बैल की सरलता, सहनशीलता एवं निश्छलता की प्रशंसा करते हैं। उनके अनुसार जिसे संसार 'मूर्खता' कहता है, वह असल में सीधापन, सहनशीलता एवं विरोध न जता पाने की विवशता है — यही गुण उसे पूजनीय बनाते हैं। यह 'मूर्ख' शब्द प्रशंसा का छद्म-रूप है।

TOPIC

हीरा-मोती का विद्रोह

TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** बैल केवल भोले एवं असहाय हैं, वे कभी विरोध नहीं करते।

✓ **CORRECT** हीरा-मोती सहनशील अवश्य हैं, परंतु निरे असहाय नहीं। वे गया के घर से भागते हैं, हल जोतने से इनकार करते हैं, कांजीहौस की दीवार तोड़ देते हैं और सांड से लड़ पड़ते हैं। यह उनका स्वतंत्रता के लिए अहिंसक एवं सक्रिय विद्रोह है। प्रेमचंद का संदेश यही है कि अत्यधिक अन्याय के विरुद्ध सहनशील भी विद्रोह कर उठता है।

TOPIC

झूरी एवं गया का अंतर

TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** झूरी और गया दोनों मालिक हैं, अतः दोनों समान हैं।

✓ **CORRECT** दोनों मालिकों में मौलिक अंतर है। झूरी बैलों से स्नेह करता है, उन्हें परिवार का सदस्य मानता है — इसीलिए बैल उसके पास लौट आते हैं। गया कठोर, स्वार्थी एवं निर्दयी है — मारता-पीटता है, भूखा रखता है। यही अंतर दिखाता है कि स्नेह से वशीभूत किया जा सकता है, बल से नहीं। यह स्वामी-सेवक सम्बन्ध का नैतिक संदेश है।

TOPIC

छोटी लड़की वाला प्रसंग

TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** छोटी लड़की का प्रसंग कथा में अनावश्यक है।

✓ **CORRECT** यह प्रसंग कथा का मार्मिक एवं केंद्रीय भाव-बिंदु है। गया के घर की छोटी (सौतेली) लड़की बैलों को छिपकर रोटियाँ खिलाती है एवं अंत में उनकी रस्सी खोल देती है। यह दृश्य निरीह के प्रति निर्दोष करुणा एवं मानवीय संवेदना का प्रतीक है। यही करुणा बैलों की मुक्ति का कारण बनती है — अतः यह प्रसंग कथा की धुरी है, अनावश्यक नहीं।

TOPIC

कहानी का अंत

TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** बैल अंत में मर जाते हैं / सदा के लिए कैद रहते हैं।

✓ **CORRECT** कहानी का अंत आशावादी है। अनेक कष्टों — गया का अत्याचार, कांजीहौस की कैद, नीलामी का भय — के बाद बैल अंततः अपने मालिक झूरी के घर सकुशल लौट आते हैं। झूरी उन्हें प्रेम से अपनाता है। यह अंत संदेश देता है कि स्वतंत्रता एवं स्नेह की विजय निश्चित है — संघर्ष कितना भी कठिन क्यों न हो।

TOPIC

प्रेमचंद का नाम/परिचय

TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** प्रेमचंद का वास्तविक नाम प्रेमचंद ही था।

✓ **CORRECT** प्रेमचंद उनका साहित्यिक उपनाम है। उनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। उन्हें 'उपन्यास सम्राट' कहा जाता है। 'गोदान', 'गबन', 'निर्मला', 'कफन', 'पंच परमेश्वर', 'ईदगाह' उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। वे आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं। परीक्षा में कवि/लेखक-परिचय का प्रश्न प्रायः पूछा जाता है।

TOPPER TEMPLATE · MARK-BY-MARK

5 अंक — 'हीरा और मोती की मित्रता किन-किन अवसरों पर प्रकट होती है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।'

1	**मित्रता की भूमिका** 1 m	हीरा और मोती दो बैल हैं जिनके बीच गहन, अटूट एवं निःस्वार्थ मित्रता है। प्रेमचंद ने इस मित्रता को मनुष्य-मैत्री के आदर्श के रूप में चित्रित किया है — दोनों एक-दूसरे के सुख-दुख में सदैव साथ रहते हैं, संकट में एक-दूसरे की रक्षा करते हैं और कभी अलग नहीं होना चाहते।
2	**पहला प्रसंग — खेत एवं भोजन में सहभाव** 1 m	खेत जोतते समय दोनों कंधे-से-कंधा मिलाकर चलते हैं और एक-दूसरे से अधिक भार उठाने की होड़ करते हैं ताकि साथी पर बोझ कम पड़े। नाँद पर खाते समय भी एक मुँह हटाता तो दूसरा भी हट जाता — परस्पर त्याग एवं समान-भाव उनकी मैत्री का प्रथम प्रमाण है।
3	**दूसरा प्रसंग — गया के घर से एक साथ भागना** 1 m	गया के घर से दोनों एक साथ रस्सी तुड़ाकर भागते हैं और रात भर साथ-साथ झूरी के घर लौटते हैं। एक-दूसरे को छोड़कर अकेले भागने की वे कल्पना भी नहीं करते। यह दिखाता है कि स्वतंत्रता की चाह में भी वे साथ ही रहना चाहते हैं — मित्रता उनकी पहली निष्ठा है।
4	**तीसरा प्रसंग — सांड एवं कांजीहौस में रक्षा** 1 m	रास्ते में जब एक सांड हीरा पर आक्रमण करता है तो मोती बिना अपनी जान की परवाह किए उस पर टूट पड़ता है और मित्र की रक्षा करता है। कांजीहौस में जब हीरा को मोटी रस्सी से बाँधा जाता है, तो मोती भागने का अवसर पाकर भी अकेला नहीं भागता — 'मित्र को संकट में छोड़कर जाना' उसे अस्वीकार है। यह आत्म-त्यागपूर्ण मैत्री का चरम है।
5	**निष्कर्ष — मित्रता का संदेश** 1 m	इस प्रकार खेत से लेकर कांजीहौस तक, हर संकट में हीरा-मोती की मित्रता और गहरी होती जाती है। प्रेमचंद इस पशु-मैत्री के माध्यम से यह आदर्श देते हैं कि सच्ची मित्रता वही है जो स्वार्थ से ऊपर उठकर त्याग एवं रक्षा पर टिकी हो। यही मैत्री कथा की आत्मा है।

TOPPER TEMPLATE · MARK-BY-MARK

5 अंक — 'दो बैलों की कथा' के माध्यम से प्रेमचंद किस उद्देश्य/संदेश को व्यक्त करना चाहते हैं?

1	**मूल उद्देश्य** 1 m	प्रेमचंद इस पशु-कथा के माध्यम से पशु-कथा से कहीं अधिक — मानवीय एवं राष्ट्रीय संदेश देना चाहते हैं। हीरा-मोती के जीवन के बहाने वे स्वतंत्रता के मूल्य, मित्रता की महिमा, श्रमजीवी की पीड़ा एवं अन्याय के विरुद्ध विद्रोह को रेखांकित करते हैं।
2	**स्वतंत्रता का मूल्य** 1 m	पहला संदेश — स्वतंत्रता से बढ़कर कुछ नहीं। बैल पराधीनता में सुख-सुविधा पाकर भी संतुष्ट नहीं; वे बंधन तोड़कर भागते हैं। प्रेमचंद कहते हैं कि स्वतंत्रता मनुष्य ही नहीं, पशु तक का जन्मसिद्ध अधिकार है — पराधीनता में सुख भी व्यर्थ है।
3	**अहिंसक विद्रोह एवं शोषण-विरोध** 1 m	दूसरा संदेश — अत्याचार सहने की भी सीमा होती है। सहनशील बैल भी जब अति होती है तो हल जोतने से इनकार करते हैं, कांजीहौस की दीवार तोड़ देते हैं। यह शोषण के विरुद्ध अहिंसक, किंतु दृढ़ विद्रोह है — श्रमजीवी एवं शोषित वर्ग के प्रतिरोध का प्रतीक।
4	**पशु-संवेदना एवं स्नेह की विजय** 1 m	तीसरा संदेश — पशुओं में भी मनुष्य जैसी संवेदना, मित्रता एवं स्वामिभक्ति होती है, अतः उनके साथ करुणा का व्यवहार होना चाहिए। साथ ही झूरी के स्नेह तथा छोटी लड़की की करुणा से यह सिद्ध होता है कि बल से नहीं, प्रेम से ही जीतना सम्भव है।
5	**प्रतीकार्थ एवं निष्कर्ष** 1 m	गहरे स्तर पर बैल भारतीय किसान एवं पराधीन भारत की जनता के प्रतीक हैं — जो परिश्रमी, सहनशील किंतु अंततः स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत है। (यह कथा स्वाधीनता-आंदोलन के काल की है।) इस प्रकार प्रेमचंद एक पशु-कथा के बहाने स्वतंत्रता, अहिंसा एवं मानवीय करुणा का बहुस्तरीय संदेश देते हैं।

TOPPER TEMPLATE · MARK-BY-MARK

3 अंक — 'इस कहानी में बैल किसके प्रतीक हैं? प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।'

1	**बैल का मूल प्रतीक** 1 m	इस कहानी में हीरा-मोती बैल भारतीय किसान एवं श्रमजीवी वर्ग के प्रतीक हैं। जिस प्रकार किसान दिन-रात परिश्रम करता है, कष्ट सहता है, फिर भी शोषित रहता है — उसी प्रकार ये बैल भी परिश्रम एवं सहनशीलता की मूर्ति हैं।
2	**पराधीन जनता का प्रतीक** 1 m	गहरे स्तर पर बैल पराधीन भारत की जनता के प्रतीक हैं। बंधन में जकड़े होकर भी स्वतंत्रता के लिए छटपटाते बैल उस पराधीन जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं जो परतंत्रता में सुख-सुविधा पाकर भी मुक्ति चाहती है। (कथा स्वाधीनता-आंदोलन के युग की है।)
3	**विद्रोह का प्रतीक एवं निष्कर्ष** 1 m	बैल केवल सहनशीलता ही नहीं, अन्याय के विरुद्ध विद्रोह के भी प्रतीक हैं — हल जोतने से इनकार, कांजीहौस की दीवार तोड़ना उनके प्रतिरोध को दर्शाते हैं। इस प्रकार बैल परिश्रम, सहनशीलता एवं स्वतंत्रता-संघर्ष — तीनों का सम्मिलित प्रतीक हैं।

PYQ PATTERNS

Top PYQ patterns to drill

#1	हीरा और मोती की मित्रता किन-किन अवसरों पर प्रकट होती है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (5 marks)	वार्षिक
#2	'दो बैलों की कथा' के माध्यम से प्रेमचंद किस संदेश को व्यक्त करना चाहते हैं? (5 marks)	अधिकांश वर्षों में
#3	इस कहानी में बैल किसके प्रतीक हैं? प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए। (3 marks)	वार्षिक
#4	छोटी लड़की का बैलों के प्रति व्यवहार पाठ में क्या भूमिका निभाता है? (3 marks)	2019, 2021, 2023
#5	गद्यांश पढ़कर भाव/शब्दार्थ/संदेश बताइए (पाठ की किसी एक घटना पर)। (3-4 marks)	लगभग प्रति परीक्षा

MARKS DISTRIBUTION

10-year marks distribution

10-YEAR PYQ MARKS DISTRIBUTION

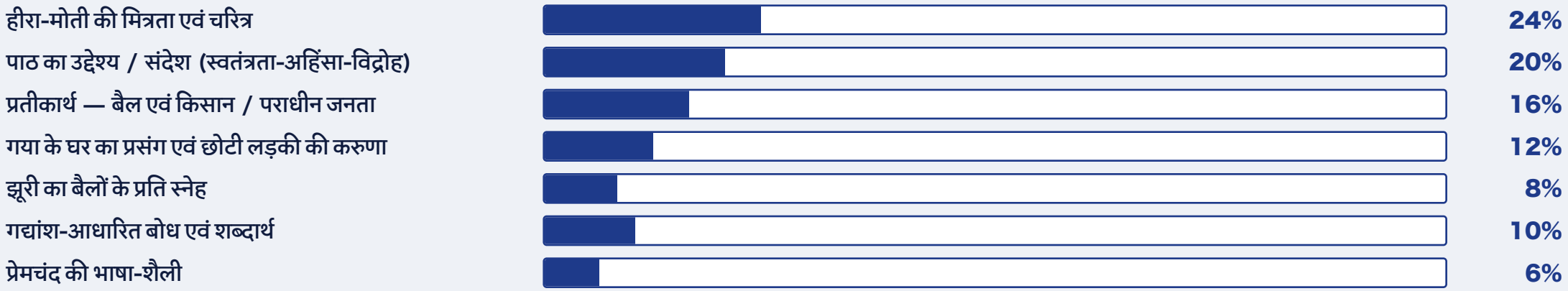

RECAP · MEMORISE THESE

स्मरणीय बिंदु

1 लेखक-परिचय — प्रेमचंद — वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव (1880-1936), 'उपन्यास सम्राट', आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के प्रवर्तक।

2 प्रमुख पात्र — हीरा (विवेकी-सहनशील), मोती (निर्भीक-आत्मत्यागी), झूरी (स्नेही मालिक), गया (कठोर मालिक), छोटी लड़की (करुणा)।

3 घटनाक्रम — खेत में होड़ → गया के घर अत्याचार → भागना → सांड से लड़ाई → कांजीहौस की कैद → लड़की द्वारा मुक्ति → झूरी के घर वापसी।

4 केंद्रीय संदेश — स्वतंत्रता सर्वोपरि · अटूट मित्रता · अन्याय के विरुद्ध अहिंसक विद्रोह · पशु-संवेदना · स्नेह से विजय।

5 प्रतीकार्थ — बैल = भारतीय किसान + पराधीन भारत की जनता + सहनशील किंतु विद्रोही श्रमजीवी। गया = शोषक व्यवस्था।

6 अंक-निधि — मित्रता का प्रश्न — 90% परीक्षाओं में। संदेश/उद्देश्य — 85%। प्रतीकार्थ — 80%। छोटी लड़की वाला प्रसंग सर्वाधिक छूटता है।

WHAT'S NEXT

अगला अध्याय

→ अध्याय 2 — ल्हासा की ओर · राहुल सांकृत्यायन (यात्रा-वृत्तांत)।

→ 15 MCQ की त्वरित-ड्रिल हल करें — लक्ष्य ⩾ 12/15।

→ 30 अंकी बोर्ड-पैटर्न पेपर लिखें — पूर्ण आदर्श उत्तरों के साथ अभ्यास करें।

आपने क्षितिज का पहला गद्य पाठ समाप्त किया।

मित्रता · स्वतंत्रता · प्रतीकार्थ — अब परीक्षा में सिद्ध कीजिए।

readyforboards.com

Helpline: +91 70330 05444

Boards prep that builds confidence, not anxiety.